भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

संपादक

डॉ. परविंदरकौर महाजन कोल्हापूरे

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.)
Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
हं. 57, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फोन : +91 9968084132, +91 7982062594
arpublishingco11@gmail.com

BHARTIYA SWADHINTA ANDOLAN AUR HINDI SAHITYA
Edited by Dr. Parvinder Kaur Mahajan Kolhapure

ISBN : 978-93-94165-22-9

© प्राचार्य/हिंदी विभागाध्यक्ष
नेताजी सुभाषचंद्र बोस कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, नांदेड

प्रथम संस्करण : 2023
मूल्य : ₹ 495

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से प्रयोग करने के लिए संपादक व प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

ऑफसेट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

संपादकीय

किसी भी राष्ट्र की भाषा उसके समग्र राष्ट्र की चेतना को स्पष्ट करती है। उस भाषा के साहित्य में विभिन्न तत्वों का समावेश होना जहाँ आवश्यक है वहीं राष्ट्रीय भावना का समावेश होना नैसर्गिक है। राष्ट्रीय भावना ही किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मंत्र माना जा सकता है। भारतीय इतिहास में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का आशय 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्य तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी के विरुद्ध भारतीय जनता द्वारा किए गए राजनीतिक संघर्ष से है। इसके पीछे का कारण ब्रिटिश साम्राज्य की कूटनीति थी। इस भारतभूमि पर व्यापार करने के बहाने से आए अंग्रेजों ने धीरे-धीरे संपूर्ण भारत पर अपना कब्जा कर लिया। उनका उद्देश्य भारत देश का शोषण कर अपने देश की आर्थिक उन्नति करना था इसीलिए उनके प्रति भारतवासियों में विद्रोह और आक्रोश होना स्वाभाविक था। यही आक्रोश धीरे धीरे बढ़ता हुआ स्वाधीनता संग्राम के रूप में फूट पड़ा। भारत का स्वाधीनता संग्राम राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय आवाहनों, उत्तेजनाओं, प्रयत्नों द्वारा प्रेरित भारत के विभिन्न संगठनों द्वारा संचालित आंदोलन था। इसका एकमात्र उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य से भारत माता को मुक्त कराना था। इस स्वतंत्रता संग्राम का आरंभ 1857 के विद्रोह से माना जा सकता है जिसमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, मंगल पांडे आदि कई युद्ध वीरों ने अपना बलिदान दिया। इस विद्रोह ने स्वाधीनता संग्राम के बीज को भारतीय जनमानस के हृदय में बो दिया था। अंग्रेजी हुकूमत को हटाने और एक स्वतंत्र भारत राष्ट्र के निर्माण के लिए संपूर्ण भारतवासी एकजुट होकर इस आंदोलन में कूद पड़े और यहीं से यह भारतीय स्वाधीनता आंदोलन भारत भर में फैल गया। देशभर में कई छोटे-बड़े विद्रोह हुए, क्रांतिकारियों ने हिंसा और अहिंसात्मक ढंग से लड़ाई लड़ी, संपूर्ण देश भर में राष्ट्रीयता की भावना निर्माण हुई जिसके परिणामस्वरूप सन 1947 मे भारत को आजादी मिली।

इस प्रकार 1857 से 1947 तक के दौरान भारतवर्ष जिन परिस्थितियों से गुजरा उसने एक अद्भुत ओज वाले भारतीय साहित्य का निर्माण किया। समस्त भारतीय

अनुक्रम

1. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य — 13
   —चेतन गिरिधरसिंह चौहान
2. भारतेन्दु के साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना — 17
   —डॉ. प्रा. संतोष विजय येरावार
3. स्वाधीनता आन्दोलन और महावीर प्रसाद द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्य धारा — 23
   —डॉ. मापारे श्यामसुंदर
4. स्वाधीनता आंदोलन और जयशंकर प्रसाद के नाटक — 28
   —डॉ. शेख इकबाल अहेमद
5. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीयता — 34
   —डॉ. परमिंदर कौर महाजन / जगतार कौर परशनसिंघ महंत
6. सुमित्रानंदन पंत के काव्य में चित्रित महात्मा गांधी — 39
   —डॉ. मुकुंद कवडे / डॉ. विजय पवार
7. स्वाधीनता आंदोलन और उपन्यास सम्राट 'प्रेमचंद' — 45
   —डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटील
8. स्वाधीनता आंदोलन में [illegible] कैफी आजमी का योगदान — 52
   —डॉ. [illegible] र. पठाण
9. स्वाधीनता आंदोलन के कथाकार प्रेमचंद — 57
   —डॉ. दीपक [illegible] पवार
10. स्वाधीनता आंदोलन (हिंदी लोक साहित्य) — 64
    —डॉ. [illegible]
11. स्वाधीनता आंदोलन का बलिदान व्यर्थ न हो — 68
    —डॉ. [illegible] गायकवाड
12. [illegible] के काव्य में राष्ट्रीय चेतना — 74
    —डॉ. [illegible] शर्मा

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

6. सुमित्रानंदन पंत के काव्य में चित्रित महात्मा गांधी

डॉ. मुकुंद कवडे / डॉ. विजय पवार
हिंदी विभाग, पीपल्स महाविद्यालय, नांदेड़
हिंदी विभाग, श्री गुरु बुद्धिस्वामी महाविद्यालय पूर्णा

वैश्विक इतिहास में भारतीय स्वाधीनता संग्राम अपने अस्त्र हीन और रक्त हीन क्रांति के लिए जाना जाता है। हालांकि रक्तरंजित घटनाएं भी हुई है किंतु महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में सत्य, अहिंसा और असहयोग के मार्ग पर चल कर भारतीय जनता ने लगभग डेढ़ सौ वर्ष की अंग्रेजों की गुलामी को समाप्त कर स्वाधीनता हासिल की थी इसलिए भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को एक अलग रूप से वैश्विक महत्व प्राप्त है, उसका श्रेय राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के योगदान को जाता है उन्होंने अपने आंदोलन के द्वारा भारतीय लोगों को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करने का सफल प्रयास किया है। वैसे देखा जाए तो गांधी जी के इस योगदान को कई कवियों ने अपने साहित्य का विषय बनाया है कई रचनाकारों ने राष्ट्र नायक और युग नायक के रूप में महात्मा गांधी जी की प्रशंसा की है। महात्मा गांधी जी की समग्र कार्य को अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। वैसे देखा जाए तो हिंदी साहित्य में भारतेंदु से लेकर कई कवियों ने भारतीय आजादी के लिए साहित्य सृजन किया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, सियारामशरण गुप्त, मैथिलीशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, श्याम नारायण पांडे, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी कई नाम लिए जा सकते हैं जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गांधी जी की भूमिका और योगदान को स्पष्ट किया है। इसी परंपरा में एक महत्वपूर्ण नाम जुड़ जाता है वह सुमित्रानंदन पंत का जो छायावादी कवि होने के नाते केवल प्रकृति, नारी और भाव सौंदर्य के चित्रण तक सीमित नहीं रहे बल्कि अपने लोकायतन इस काव्य में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की सारी घटनाओं और महात्मा गांधीजी के योगदान को स्पष्ट किया है। लोकायतन काव्य [illegible]ा मुक्ति यज्ञ रहा है। जिसमें

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani